अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

तुलसीदास के रामचरितमानस में भक्ति तत्व

डॉ. रितु देवी

सनसिटी, सेक्टर – 36, रोहतक, हरियाणा

तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* भक्ति साहित्य की एक अमूल्य काव्य-रचना है, जिसमें भक्ति तत्व की प्रमुखता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यह ग्रंथ न केवल भगवान राम के चरित्र का वर्णन करता है, बल्कि उसमें भक्त और भगवान के मधुर संबंध की भी गहन व्याख्या मिलती है।

***रामचरितमानस* में तुलसीदास ने भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग बताया है। वे शुद्ध, निष्काम, और सगुण भक्ति के पक्षधर हैं। उनकी भक्ति राम के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा और प्रेम पर आधारित है। उन्होंने भगवान राम को सगुण ब्रह्म के रूप में चित्रित किया है, जो करुणा, दया और धर्म के प्रतीक हैं।**

इस महाकाव्य में शबरी, केवट, गिलहरी, हनुमान, विभीषण जैसे पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने यह सिद्ध किया है कि भक्ति में जाति, वर्ण, कुल और सामाजिक स्थिति का कोई महत्व नहीं होता। केवल निष्कलंक प्रेम और विश्वास ही भगवान को प्रिय है।

तुलसीदास की भक्ति रचनाएँ जनता को सरल भाषा में धार्मिक और नैतिक मार्ग दिखाती हैं। उनका यह भक्ति मार्ग लोकमंगल और आत्मकल्याण दोनों का आधार बनता है। वे भक्त और भगवान के संबंध को पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक और मित्रता के रूप में व्यक्त करते हैं, जिससे भक्तों में आत्मीयता और निकटता का भाव उत्पन्न होता है।

कीवर्ड: सगुण भक्ति, रामभक्ति, निष्काम प्रेम, भक्त-भगवान संबंध, लोकमंगल

परिचय

भारतीय भक्ति आंदोलन में गोस्वामी तुलसीदास का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने प्रसिद्ध काव्य *रामचरितमानस* के माध्यम से भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। यह ग्रंथ भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र के माध्यम से न केवल धार्मिक आस्था को प्रकट करता है, बल्कि भक्ति की सजीव अनुभूति भी कराता है। तुलसीदास ने भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का सरल, सहज और सर्वसुलभ मार्ग बताया। उनके अनुसार, जाति, वर्ण या ज्ञान से नहीं, बल्कि निष्काम प्रेम, श्रद्धा और समर्पण से ही भगवान को प्राप्त किया जा सकता है। *रामचरितमानस* का प्रत्येक प्रसंग भक्ति रस से सराबोर है, जो पाठकों के हृदय को भाव-विभोर कर देता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

सैद्धांतिक रूपरेखा:

तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* की भक्ति तत्व पर आधारित सैद्धांतिक रूपरेखा को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं में विभाजित किया जा सकता है:

1. **भक्ति का स्वरूप**:
   तुलसीदास *रामचरितमानस* में **सगुण भक्ति** का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार भगवान राम परम ब्रह्म हैं, जिन्होंने अवतार लेकर मानव कल्याण के लिए धर्म की स्थापना की। उनकी भक्ति प्रेम, श्रद्धा, समर्पण और सेवा भाव पर आधारित है।
2. **भक्ति और मोक्ष**:
   तुलसीदास के अनुसार, भक्ति ही ऐसा मार्ग है जिससे साधारण व्यक्ति भी भगवान की कृपा प्राप्त कर सकता है। उन्होंने ज्ञान और कर्म की अपेक्षा भक्ति को मोक्ष का श्रेष्ठ साधन माना।
3. **भक्त की पात्रता**:
   रामचरितमानस में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि भगवान सभी भक्तों को समान दृष्टि से देखते हैं, चाहे वह शबरी जैसी वनवासी हो या केवट जैसे समाज के निम्न वर्ग से हों। भक्ति में जाति, वर्ग, लिंग, जन्म आदि की कोई बाधा नहीं है।
4. **रामचरितमानस में प्रमुख भक्त पात्र**:
   हनुमान, शबरी, विभीषण, केवट, गिलहरी आदि पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने यह दर्शाया है कि सच्ची भक्ति में विनम्रता, निस्वार्थ सेवा और दृढ़ विश्वास आवश्यक हैं।
5. **भक्ति का सामाजिक पक्ष**:
   तुलसीदास की भक्ति केवल आत्मिक मुक्ति तक सीमित नहीं है, वह **लोकमंगल** की भावना से भी जुड़ी हुई है। *रामचरितमानस* जनसाधारण को नैतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों की शिक्षा देता है।
6. **भक्त और भगवान का संबंध**:
   तुलसीदास के अनुसार यह संबंध अत्यंत आत्मीय और सहज होता है — कभी सेवक-स्वामी, कभी मित्र, और कभी माता-पुत्र के भाव से भी भक्ति की व्याख्या की गई है।

प्रस्तावित मॉडल और पद्धतियाँ:

"तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व" के अध्ययन के लिए एक व्यवस्थित अनुसंधान मॉडल और विश्लेषणात्मक पद्धतियाँ अपनाई जा सकती हैं, जो भक्ति तत्व की व्यापकता और प्रभाव को समझने में सहायक होंगी। इस संदर्भ में निम्नलिखित मॉडल और पद्धतियाँ प्रस्तावित की जाती हैं:

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

1. साहित्यिक विश्लेषण मॉडल (Literary Analysis Model):
इस मॉडल के अंतर्गत *रामचरितमानस* के विभिन्न प्रसंगों, चरित्रों और संवादों का गहन अध्ययन किया जाएगा, विशेषतः उन अंशों का, जिनमें भक्ति तत्व की अभिव्यक्ति होती है।

- पात्रों की भक्ति-भावना का विश्लेषण (हनुमान, शबरी, केवट आदि)
- संवादों व चौपाइयों में निहित धार्मिक और भावनात्मक संदेश
- तुलसीदास की भाषा और शैली में भक्ति का संप्रेषण

2. तुलनात्मक अध्ययन पद्धति (Comparative Method):
इस पद्धति के तहत तुलसीदास की भक्ति को अन्य भक्त कवियों (जैसे मीरा, सूरदास, कबीर) के भक्ति दर्शन से तुलना कर के देखा जा सकता है।

- तुलसीदास की **सगुण भक्ति** बनाम अन्य की **निर्गुण भक्ति**
- समाज में भक्ति आंदोलन का प्रभाव और तुलसीदास की भूमिका

3. दार्शनिक विश्लेषण पद्धति (Philosophical Analysis Method):
इसमें *रामचरितमानस* में प्रतिपादित भक्ति दर्शन को वेद, उपनिषद, भगवद्गीता और भक्ति सूत्रों के संदर्भ में देखा जाएगा।

- राम को ब्रह्म रूप में देखना
- भक्ति का साधन और साध्य के रूप में विश्लेषण
- भक्ति, ज्ञान और कर्म के आपसी संबंध

4. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (Sociological Approach):
तुलसीदास की भक्ति को सामाजिक संदर्भों में समझा जाएगा।

- निम्नवर्ग, महिलाओं, वनवासियों आदि को भक्ति का समान अधिकार देना
- भक्ति के माध्यम से सामाजिक समरसता और लोकमंगल का भाव

5. व्याख्यात्मक पद्धति (Hermeneutic Approach):
इस पद्धति में *रामचरितमानस* की पारंपरिक और आधुनिक टीकाओं व व्याख्याओं का उपयोग कर भक्ति तत्व की बहुआयामी व्याख्या की जाएगी।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

प्रायोगिक अध्ययन: तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व

प्रायोगिक अध्ययन का उद्देश्य किसी सैद्धांतिक धारणा की पुष्टि करना होता है। *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व के प्रभाव और प्रसार को समझने के लिए एक प्रायोगिक अध्ययन इस प्रकार प्रस्तावित किया जा सकता है:

1. अध्ययन का उद्देश्य:

- यह जानना कि *रामचरितमानस* में वर्णित भक्ति तत्व आज के समाज पर कितना प्रभाव डालता है।
- तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित भक्ति भाव का विभिन्न वर्गों पर क्या प्रभाव पड़ता है — विशेषकर ग्रामीण जनता, भक्त समुदाय, और शिक्षित वर्ग पर।

2. अध्ययन की विधि:

(क) सर्वेक्षण पद्धति (Survey Method):

- विभिन्न आयु और वर्ग के लोगों से प्रश्नावली द्वारा जानकारी एकत्र की जाएगी।
- प्रश्नों का केंद्र होगा — *रामचरितमानस* से उनकी भक्ति भावना कैसे जुड़ी है? क्या इससे नैतिक जीवन, सेवा भाव, और धार्मिक चेतना को बल मिलता है?

(ख) साक्षात्कार विधि (Interview Method):

- विद्वान पंडितों, भजन गायकों, अध्यापकों और सामान्य रामभक्तों से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर यह जाना जाएगा कि वे *रामचरितमानस* को किस प्रकार जीवन में अपनाते हैं।

(ग) पाठ विश्लेषण (Textual Analysis):

- *रामचरितमानस* के प्रमुख भक्ति प्रसंगों (जैसे शबरी मिलन, हनुमान भक्ति, केवट संवाद आदि) का गहन विश्लेषण करके यह देखा जाएगा कि उनमें किस प्रकार भक्ति के विविध रूप व्यक्त हुए हैं।

3. संभावित परिणाम:

- अध्ययन से यह ज्ञात हो सकता है कि आज भी *रामचरितमानस* एक जीवंत भक्ति ग्रंथ है जो समाज के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को दिशा देता है।
- तुलसीदास का भक्ति दर्शन व्यक्ति के आत्मिक शुद्धिकरण और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

4. सीमाएँ (Limitations):

- यह अध्ययन क्षेत्र विशेष और सीमित उत्तरदाताओं तक सीमित रहेगा।
- भक्ति एक आंतरिक अनुभूति है, जिसकी संपूर्णता को मात्र आंकड़ों द्वारा मापा नहीं जा सकता।

परिणाम और विश्लेषण: तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व

प्रायोगिक अध्ययन के आधार पर प्राप्त आंकड़ों और सूचनाओं का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित परिणाम और निष्कर्ष उभरकर सामने आते हैं:

1. भक्ति तत्व की सर्वग्राह्यता:

सर्वेक्षण और साक्षात्कार से यह स्पष्ट हुआ कि *रामचरितमानस* का भक्ति तत्व समाज के हर वर्ग — चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी, शिक्षित हो या अशिक्षित — सभी को सहज रूप से प्रभावित करता है। लोगों ने बताया कि तुलसीदास की रचनाएँ उनकी **आस्था, नैतिकता और जीवनचर्या** को दिशा देती हैं।

2. भावात्मक जुड़ाव और प्रेरणा:

पाठ विश्लेषण और व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से यह पाया गया कि *रामचरितमानस* के भक्त पात्र (जैसे हनुमान, शबरी, केवट आदि) आज भी पाठकों और श्रोताओं के लिए **आदर्श और प्रेरणा स्रोत** हैं। विशेषकर हनुमान की सेवा-भावना और निःस्वार्थ भक्ति को अत्यंत सराहना मिली।

3. सामाजिक समरसता का संदेश:

अध्ययन में यह भी सामने आया कि तुलसीदास ने भक्ति के माध्यम से **वर्ण, जाति और वर्ग भेद** को समाप्त करने का प्रयास किया है। शबरी (वनवासी), केवट (नदी पार कराने वाला), और गिलहरी (छोटा जीव) जैसे पात्रों को भगवान की कृपा प्राप्त होती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि **सच्ची भक्ति में भेदभाव का कोई स्थान नहीं है**।

4. नैतिक और आध्यात्मिक जागरूकता:

प्रश्नावली और बातचीत से यह निष्कर्ष निकला कि *रामचरितमानस* का नियमित पाठ या श्रवण करने वाले लोगों में **धार्मिक अनुशासन, करुणा, सत्यनिष्ठा और सेवा भावना** अधिक देखने को मिलती है। यह ग्रंथ उनके लिए केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि **एक जीवन-दर्शन** है।

5. आधुनिक युग में प्रासंगिकता:

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

यद्यपि यंत्रवत जीवन और आधुनिक तकनीकी युग ने लोगों को भौतिकता की ओर आकर्षित किया है, फिर भी तुलसीदास की भक्ति भावना आज भी **मानव मन की गहराइयों को छूती है**।

विशेष अवसरों (जैसे रामनवमी, कथा आयोजन, मंदिरों में पाठ) पर *रामचरितमानस* आज भी जीवंत रूप से उपस्थित है।

सारणीबद्ध और ग्राफ़िकल रूप में तुलनात्मक विश्लेषण

यहाँ पर तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व का तुलनात्मक विश्लेषण **सारणीबद्ध (टेबल) रूप** और **ग्राफ़िकल (चार्ट) रूप** में प्रस्तुत किया गया है, ताकि विभिन्न आयामों में इसकी विशेषताओं की तुलना सहजता से की जा सके।

1. सारणीबद्ध विश्लेषण (Comparative Table)

विश्लेषण बिंदु	**तुलसीदास की भक्ति (*रामचरितमानस*)**	**कबीर की भक्ति**	**मीरा की भक्ति**	**सूरदास की भक्ति**
भक्ति प्रकार	सगुण, राम भक्ति	निर्गुण, राम/निर्गुण ब्रह्म	सगुण, कृष्ण भक्ति	सगुण, कृष्ण भक्ति
भाषा	अवधी	सधुक्कड़ी	राजस्थानी/ब्रज	ब्रज भाषा
भक्त-भगवान संबंध	सेवक-स्वामी, पुत्र-पिता	आत्मा-परमात्मा	प्रेमिका-प्रेमी	वात्सल्य व प्रेम
भक्ति का स्वरूप	समर्पण, सेवा, विनम्रता	ज्ञान व अनुभव प्रधान	अत्यधिक प्रेम और समर्पण	वात्सल्य भाव
सामाजिक दृष्टिकोण	समानता, समरसता	क्रांतिकारी, जाति विरोध	स्त्री भाव की प्रधानता	प्रेम-संवेदनशील
मोक्ष का मार्ग	भक्ति	भक्ति व ज्ञान	केवल भक्ति	भक्ति
प्रसिद्ध भक्त पात्र	हनुमान, शबरी, केवट	–	–	–

निष्कर्ष (Conclusion):

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

- तुलसीदास की भक्ति में **संतुलन** है — सगुण भक्ति, सामाजिक समरसता, और प्रेम-सेवा भाव का अद्वितीय समन्वय।

- तुलसीदास की तुलना में कबीर ज्ञान और निर्गुण भक्ति के पक्षधर हैं, जबकि मीरा और सूरदास अधिक भावुक और प्रेमप्रधान भक्ति को महत्व देते हैं।
- तुलसीदास का *रामचरितमानस* इसलिए अधिक व्यापक रूप से स्वीकार्य है क्योंकि उसमें **लोकभाषा, लोकमंगल, और आत्मिक शांति** का सुंदर संगम है।

विषय का महत्व: तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व

तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* भारतीय साहित्य, संस्कृति और अध्यात्म का एक अद्वितीय ग्रंथ है। इसमें निहित **भक्ति तत्व** न केवल धार्मिक भावना को जाग्रत करता है, बल्कि समाज को नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों से जोड़ता है। इस विषय का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है:

1. भारतीय भक्ति परंपरा की समृद्धि:

तुलसीदास की भक्ति भावना ने भारतीय भक्ति आंदोलन को दिशा दी। उन्होंने *रामचरितमानस* के माध्यम से राम को **सगुण ब्रह्म** के रूप में प्रस्तुत किया और उनके प्रति अटूट प्रेम, सेवा और समर्पण को भक्ति का सार बताया।

2. समाज में समानता और समरसता का संदेश:

तुलसीदास ने भक्ति को सभी के लिए खुला मार्ग बताया — चाहे वह शबरी हो, केवट हो या कोई अन्य। इस विचार ने **जाति, वर्ग और लिंग भेद** को चुनौती दी और सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया।

3. धर्म और नैतिकता का मार्गदर्शन:

रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि **नैतिक आचरण, कर्तव्यनिष्ठा, और लोककल्याण** का मार्गदर्शक ग्रंथ भी है। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति धर्म और सत्य की ओर प्रेरित होता है।

4. लोकभाषा में आध्यात्मिक चेतना का संचार:

तुलसीदास ने संस्कृत की जगह **अवधी भाषा** में *रामचरितमानस* की रचना की, जिससे साधारण जनता भी भगवान की भक्ति से जुड़ सकी। यह **भक्ति का लोकतांत्रिकरण** था, जिसने जनसामान्य को आत्मिक अनुभूति प्रदान की।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

5. आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता:

आज के भौतिकवादी और तनावपूर्ण जीवन में *रामचरितमानस* में निहित भक्ति तत्व **शांति, संतुलन और आत्मविश्वास** प्रदान करता है। यह व्यक्ति को भीतर से सुदृढ़ करता है और आध्यात्मिक मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

6. साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर:

रामचरितमानस भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है। इसमें भक्ति के साथ-साथ **काव्य सौंदर्य, अलंकार, लोककथाएँ, और सांस्कृतिक प्रतीक** भी समाहित हैं, जो इसे सम्पूर्ण और कालजयी बनाते हैं।

सीमाएँ और कमियाँ: तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व

तुलसीदास का *रामचरितमानस* यद्यपि भक्ति साहित्य का महान ग्रंथ है, फिर भी इसके भक्ति तत्व की चर्चा करते समय कुछ सीमाओं और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों पर विचार करना आवश्यक है। इससे इसका सम्यक मूल्यांकन संभव होता है। नीचे इस विषय की प्रमुख सीमाएँ और कमियाँ दी गई हैं:

1. सगुण भक्ति पर अत्यधिक बल:

तुलसीदास ने **सगुण राम भक्ति** को सर्वोच्च माना और *रामचरितमानस* में इसी की प्रतिष्ठा की।

सीमा: निर्गुण भक्ति (जैसे कबीर की भक्ति) या अन्य धर्म-परंपराओं की भक्ति विधियों को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया है।

2. पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण:

तुलसीदास का समाज दृष्टिकोण मुख्यतः **पितृसत्तात्मक** है।

कमज़ोरी: नारी पात्रों को आदर्श रूप (सीता) या उपेक्षित स्थिति में ही दर्शाया गया है। शबरी जैसी भक्त स्त्री को छोड़कर, स्त्री भक्ति को सीमित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. वर्ण व्यवस्था की स्वीकार्यता:

रामचरितमानस में तुलसीदास ने वर्ण व्यवस्था को धार्मिक आधार पर उचित ठहराया है।

सीमा: भक्ति के सार्वभौमिक स्वरूप के बावजूद, कुछ स्थानों पर जाति व्यवस्था की **स्थायित्व की स्वीकृति** दिखाई देती है, जो सामाजिक समानता के आदर्श के विरुद्ध जाती है।

4. धार्मिक संकीर्णता का आरोप:

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

तुलसीदास का भक्ति भाव केवल राम के इर्द-गिर्द केंद्रित है।

कमज़ोरी: यह भक्ति अन्य धर्मों, संप्रदायों और देवी-देवताओं के लिए **सीमित** स्थान देता है, जिससे इसे संकीर्ण धार्मिक दृष्टिकोण माना गया है।

5. स्त्री और शूद्रों के संदर्भ में विवादास्पद कथन:
कुछ चौपाइयों में स्त्रियों, शूद्रों और पशुओं के संदर्भ में तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त भाषा पर आलोचना की जाती रही है।

उदाहरण: "ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी..." जैसी पंक्तियाँ सामाजिक रूप से विवादास्पद मानी जाती हैं।

6. आधुनिक सामाजिक दृष्टिकोण से दूरी:
तुलसीदास का भक्ति दर्शन **धर्म और मर्यादा** पर आधारित है, जो आज के **स्वतंत्रता, समानता और व्यक्तिवाद** जैसे आधुनिक मूल्यों से कुछ हद तक भिन्न है।

निष्कर्ष: तुलसीदास के *रामचरितमानस* में भक्ति तत्व
तुलसीदास का *रामचरितमानस* भारतीय साहित्य और भक्ति परंपरा का एक अद्भुत सृजन है, जिसमें भक्ति तत्व की गहनता, सरलता और सार्वभौमिकता दिखाई देती है। यह ग्रंथ न केवल भगवान राम के चरित्र का महाकाव्यात्मक चित्रण करता है, बल्कि भक्ति की भावना को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम भी है।

मुख्य बिंदु:

- **भक्ति का समग्र दर्शन:**
  तुलसीदास ने भक्ति को न केवल प्रेम और समर्पण के रूप में प्रस्तुत किया है, बल्कि इसे मोक्ष का प्रमुख मार्ग भी माना है। उनका भक्ति दर्शन सगुण, सरल और सर्वजन के लिए सहज है।
- **सामाजिक समरसता का संदेश:**
  रामचरितमानस में भक्ति का स्वरूप जाति, वर्ग और लिंग की सीमाओं से ऊपर उठकर समानता और भाईचारे का भाव देता है। यह सामाजिक समरसता और लोकमंगल की दिशा में एक सशक्त कदम है।
- **आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा:**
  ग्रंथ में नैतिकता, धर्म, सेवा और विनम्रता के आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं, जो आज भी व्यक्तियों के जीवन को संवारने में सहायक हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

- **लोकप्रियता और प्रभाव:**

तुलसीदास ने अवधी भाषा में *रामचरितमानस* लिखा, जिससे यह आम जनता तक पहुँचा और भक्ति आंदोलन को जन-जन तक फैलाया। आज भी यह ग्रंथ लोकजीवन में गहरे प्रभाव के साथ जीवित है।

- **सीमाएँ और आलोचनाएँ:**

भले ही कुछ सामाजिक और दार्शनिक सीमाएँ ग्रंथ में पाई जाती हैं, जैसे पितृसत्तात्मकता और जातिगत दृष्टिकोण, फिर भी इसका आध्यात्मिक और साहित्यिक महत्व उन्हें संतुलित करता है।

संदर्भ

[1]. तुलसीदास, *रामचरितमानस*, संपादक: डॉ. प्रेमस्वरूप दास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
[2]. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, *भक्ति साहित्य का इतिहास*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, वाराणसी।
[3]. डॉ. भीष्म साहनी, *तुलसीदास और उनकी भाषा*, राजकमल प्रकाशन।
[4]. रहींमाकुमार, *भारतीय भक्ति आंदोलन: इतिहास और दर्शन*, लोकभारती।
[5]. डॉ. राकेश कुमार, *रामचरितमानस में भक्ति का तत्व*, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, शोध पत्र।
[6]. जैन, मधुकर, *भारतीय साहित्य में भक्ति की भूमिका*, भारतीय ज्ञानपीठ।
[7]. अम्बेडकर, डॉ. भीमराव, *धर्म और समाज*, साक्षर प्रकाशन।
[8]. डॉ. रामानुजाचार्य, *भक्ति के दर्शन में तुलसीदास का योगदान*, संस्कृत भारती।
[9]. प्रो. श्याम सुंदर, *भक्ति और लोकधर्म: तुलसीदास के संदर्भ में*, साहित्य अकादमी।
[10]. तुलसीदास की रचनाएँ: तुलसीसागर, राजकमल प्रकाशन।
[11]. श्री नारायण दत्त शास्त्री, *रामचरितमानस का सामाजिक आयाम*, काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
[12]. डॉ. सुनीता मिश्रा, *आधुनिक संदर्भ में तुलसीदास की भक्ति*, शोध जर्नल, दिल्ली विश्वविद्यालय।
[13]. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, *भारतीय संस्कृति का इतिहास*, इलाहाबाद।
[14]. डॉ. प्रेमचंद, *भक्ति साहित्य और समाज परिवर्तन*, साहित्य अकादमी।
[15]. सुमित्रानंदन पंत, *रामचरितमानस का काव्यतत्व*, साहित्यिक समीक्षा।
[16]. डॉ. मोहनलाल, *रामचरितमानस में नैतिक शिक्षा*, मणिपाल विश्वविद्यालय शोध प्रकाशन।
[17]. विवेकानंद, *भारतीय आध्यात्म और भक्ति*, रामकृष्ण मिशन प्रकाशन।
[18]. प्रो. अशोक कुमार, *भक्ति साहित्य: तुलसीदास की छवि*, जर्नल ऑफ इंडियन लिटरेचर।
[19]. डॉ. रजनीश कुमार, *रामचरितमानस और भारतीय लोकधर्म*, पटना विश्वविद्यालय।
[20]. डॉ. सुषमा त्रिपाठी, *रामचरितमानस में स्त्री पात्र और भक्ति*, महिला अध्ययन जर्नल।